पर्यावरण संरक्षण एवं मानवाधिकार;

एक समसामयिक विश्लेषण

डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर • डॉ. महेश चंद्र मीना

अनुक्रम

अध्याय	विषय वस्तु	पृष्ठ सं.
1.	वैदिक ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण एवं मानव अधिकार राजेश कुमार गुर्जर	1
2.	भारत में पर्यावरण संरक्षण की परम्पराऐं एवं मानवाधिकार डॉ. मंजु नावरिया	6
3.	मानव विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन शिम्भू दयाल मीना	29
4.	पर्यावरण संरक्षण में मानव का योगदान डॉ. महेश चन्द मीना	37
5.	पर्यावरण संरक्षण और मानव डॉ. सीताराम बैरवा	42
6.	स्वच्छ पर्यावरण : एक मानवाधिकार राम विलास मीणा	51
7.	पर्यावरण एवं मानवाधिकार डॉ. पूनम, डॉ. राम शंकर पाण्डेय	67
8.	पर्यावरण संरक्षण एवं मानव (पर्यटन के सन्दर्भ में) सत्यप्रकाश मीना	73
9.	समाज, पर्यावरण और मानवाधिकार डॉ. राकेश राणा	77
10.	पर्यावरण एवं मानवाधिकारों का वैधानिक संरक्षण छुट्टन लाल मीना	86
11.	महिला अपराध एवं मानवाधिकार : एक विश्लेषण डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर	90
12.	पर्यावरण सरंक्षण में स्त्री की भूमिका और मानवाधिकार डॉ. रंजना गर्ग	107

1

वैदिक ग्रन्थों में पर्यावरण संरक्षण एवं मानव अधिकार

राजेश कुमार गुर्जर
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शन संकाय
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

'परितः आवरणम् पर्यावरणम्' अर्थात् हमारे चारों तरफ विद्यमान तत्त्वों को पर्यावरण के नाम से जाना जाता है। जैसे : भूमि, वायु, जल इत्यादि। उन सभी तत्त्वों का समाहार ही पर्यावरण कहलाता है । इन सभी तत्त्वों के निश्चित अनुपात सन्तुलन के कारण ही यह प्रकृति सुरक्षित है। पर्यावरण के मुख्य घटकों में जल, पृथ्वी, वायु महत्त्वपूर्ण है। इन घटकों में अवांछित पदार्थ मिल जाने से उनके जैविक, रसायनिक व भौतिक गुणों में परिवर्त्तन आ जाता है, जिससे ये जीवों के लिए हानिकारक बन जाते हैं और पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। जिससे यह प्रकृति प्रदूषित होने लग जाती है। ये प्रदूषण कई प्रकार का होता है। जैसे जल–प्रदूषण, वायु–प्रदूषण, भूमि– प्रदूषण इत्यादि ।

मानव समाज में रहने वाला एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए मनुष्य का यह एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्त्व है कि उसे ऐसे प्रयास लगातार करते रहना चाहिये जिनसे पृथ्वी को प्रदूषण से बचाया जा सके तथा स्वयं भी सुरक्षित रहे। वस्तुतः यदि हम चिन्तन करें तो यह जान पाते हैं कि, मनुष्य का काम, क्रोध, लोभ, अहंकार और घमण्ड ही एक तरह से इस प्रदूषण का कारण है, तथा इनके निर्मूलन से हि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। परन्तु यहाँ ध्यान रखने की बात यह है कि इन दुष्ट गुणों का अथवा आदतों का निर्मूलन केवल और केवल सत्यभाषण, सत्यसंकल्प, ज्ञान, तथा त्याग इत्यादि विशिष्ट तथा कल्याण गुणों से ही सम्भव है। और इन विशिष्ट

प्रकाशक :

किरण परनामी

राज पब्लिशिंग हाउस

44, परनामी मंदिर, गोविन्द मार्ग, जयपुर–302004

Cell : 09414051782

Email : shreerajpublishing@gmail.com

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र सिंह गुर्जर

सह-सम्पादक

डॉ. महेश चन्द मीना

© अध्याय की विषयवस्तु के लेखकाधीन

ISBN : 978-93-88997-30-0

संस्करण : मार्च, 2021

मूल्य : 1100.00

पुस्तक वितरण क्षेत्राधिकार : सम्पूर्ण भारत

पुस्तक प्रकाशन में सम्पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि, कमी अथवा लोप का रह जाना मानवीय भूल के कारण संभव हो सकता है। जिसके लिए सम्पादक, लेखक, प्रकाशक, वितरक अथवा मुद्रक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

मुद्रक

ट्राईडेन्ट एन्टरप्राइजेज

दिल्ली–110051